International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 396-398

पंजाब प्रदेश के संत साहित्य में आध्यात्मिक चिंतन

डॉ० ज्ञानी देवी गुप्ता
हिन्दी विभाग, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवण्डी साबो पंजाब, भारत।

प्रस्तावना

पंजाब के संत साहित्य में पंजाब के दादू पंथ का विशेष महत्व हैं दादूपंथी साधुओं को अनेक देश स्थान, वेशभूषा, रहन, सहन, जीवनयापन, उपदेश आदेश प्रचार–प्रसार के ढंगों में विभिन्नता रखने के कारण, उन्हीं विभिन्नताओं के आधार पर छः मुख्य वर्गों में विभक्त किया गया है– यथा खालसा विरक्त, दखनाधा स्थानधारी, उतराधा स्थानधारी, नागा और तपसी इनके शिष्यों में बाबा बनवारी दास, संत हरिदास प्रसिद्ध है। सतगुरू ने सुरति का शब्द से मेल करवा दिया। इस सुरति–शब्द साधना में सुरति, मन तथा पवन (प्राण) सभी को एक कर त्रिकुटी में ध्यान लगाना पड़त है। इस ओर संकेत करते हुए हरिदास का कहना है कि मन, पवन तथा सुरति एक होकर तट पर भूल रहे हैं। 5 तत्व 25 प्रकृति स्थित हो गए हैं आध्यात्मिक वाणियां निम्नवत हैंः–

गुरू महिमाः– गोबिंद बैठा गोप हुय, ज्यों कूंवे में नीर।
गुरू डोरी बिन हरिदास, जल पीवै नहीं बीर।।[1] (हरिदास)
यह विचार सागर कियो, जायें रत्न अनेक।
गोप्य वेद सिद्धांत तै लहत सविवेक।।[2] (निश्चलदास)
मेरी माई री अपनो पतिव्रत कीजै।।
कंवल नइन के गुण किन गावै, जब लग जग में जीजै।।[3] (हरदास)
दादू पंथ में संध्या बदन के दादू जी की 'पंथ' आरती का गायन एक नियम है। आरती का एक इस प्रकार हैः–
इहि विधि आरती राम की कीजै।
आत्मा अंतर वारणा लीजै।।
तनम न चंदन प्रेम की माला। अनहद घंटा दीन दयाला
ज्ञान का दीपक पवन की बाती।
देव निरंजन पांचों पाती आनंद मंगल भाव की सेवा।।
मनसा मंदिर आत्म देवा भक्ति निरंतर मैं बलिहारी।
दादू न जाने सेवा तुम्हारी[4]

संपूर्ण आरती में ऐसे ही 4 ओर पद हैं। दादूपंथी आपस में मिलने पर सत्यराम से अभिवादन करते हैं। जिन्होंने जीव के गर्भ को छुआ व परमतत्व विवेचन कर उस तक पहुंचने का मार्ग प्रशसत किया । समता पंथ के जनक का नाम संत मंगतराम जी थे। यह पंथ निर्गुण संप्रदाय की आधुनिक कड़ियों में एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। 'श्री समता प्रकाश' ग्रंथ का गौरव–ग्रंथ है, जिसमें महाराज जी की पद्यबंध वाणी हैं। अपने साहित्य में उन्होंने परम पुरूश की प्रार्थना की है दूसरे अंग में 'समदर्शन योग' शीर्षक के अंतर्गत पांच मार्ग (अध्याय/प्रसंग) है। पहले मार्ग में 'सारततंनाथ' के अंतर्गत संसार की उत्पत्ति, मुस्लमानी (उत्पत्ति) भेद, सतगुरू के लक्खण, बृहम की पहचान, गुरूमुख, मनमुख पर विचार, सतनाम की असलियत, सच्चा पेम, सत विश्वास यानी यकीने–पाक, सत्पुरूषार्थ यानी साची कौशष, सत विचार यानी साचीी सौच, निर्मानता या आजषी, पर उपकार यानी ने, अपनी वस्तु पर संतोष यानी हक शनासी, प्रेम, यानी लागरज मुहस्बत, सादगी, सतसंगत तथा मौद की याद आदि पर विचार किया गया है। दूसरे मार्ग में 'अर्थ विज्ञान यात्रा अरमभते' तीसरे मार्ग 'योग चिंतामणि' के अंतर्गत योगद्वाा परमतत्व की प्रास्ति विभृत है। चौथे मार्ग में 'विवके माला' में सतज्ञान विवके का महत्व दिखाया गया है। पांचवें मार्ग 'सतसार प्रकाश' के अंतर्गत आत्म–रूप सत्य की चर्चा है।[5] तीसरा अंग का शीर्षक 'समता स्थित योग' चौथे 'चरजींव गोष्ठ' जिसमें आध्यात्मिक तत्व विवेचन किया गया है। पांचवा अग 'श्वितर परबत गोष्ठ' समता सार योग, सातवें 'विज्ञान योग' का वर्णन विश्लेषण है।

समतत या समता तत्व मंगतराम जी की दृष्टि में परमतत्व सत्य अथवा परमतत्व का समशील है।[6] उनका मत है कि सतमत का ज्ञान होने से द्वानंद की प्राप्ति होती है व यम की फांसी से मुक्ति मिल जाती है। समता योग से सब मैल कर जाते हैं, चेतन का चेतन के साथ मेल हो जाता है। समता ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। सारी सृष्टि का आरंभ तथा अंत समतात्व ही है।[7]

समता पंथ की साधना पद्धति भी संतों की पारंपरिक पद्धति सुरत शब्द योग हैं। 'समता विलास' के अनुसार 'समता योग यानी सुरत शब्द की एकता' सिमरन योग का अभ्यास, 'शब्द प्राप्ति यानी ध्यान होगा' शब्द में स्थित होना, यही राजयोग हैं सहजयोग समता का नित नियम है। समता पंथ के पांच मुख्य नियम हैं–सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग, सत सिमरन। उनके आध्यात्मिक चिंतन बिंदू विशेष उल्लेखनीय हैं।

नित ही शब्द समाध में, पुरती भई अडोल
मंगत मिटी सब वासना, सुन सतगुरू वचन अमोल।[8]

सुरति की अंतर्मुख करके नाम जपने तथा शब्द से प्रेम करने से अविगत ज्योति का प्रकट होने का विवेचन भी उपलब्ध होता ही यथाः

खैच के सुरती अंतर कीनी, नाम सिमरन की रसना लीनी।
उपरस जीवन धनी उदासी, आलख, शब्द संग प्रीति बिलासी।।
खेम कुशल तत्र प्रगट पाई, अवगत जोत निरंतर ध्याई।[9]

समता पंथ का महामंत्र हैः
'ओइम ब्रह्म सत्यम, निरंकार अजनमा अद्वैत पुरखा सर्वव्यापक कल्याण मूरत परमेश्वशये नमस्त।[10] यह मंत्र समता पंथ का मूल मंत्र गुह्य मंत्र तथा महामंत्र कहलाता है। इस मंत्र का महात्मय शाश्वत है। स्वयं संत मंगतराम के शब्दों मेंः–

तिरयोदेश अक्षर मंत्र यह, सरब सिद्ध दातार।

जो सिमरे नित प्रेम से, मंगल पाए अपार।
महमा सत सरूप की, सब अक्षर पहचान।[11]
चार वेद और सिमरती, सब का सार निधान।

समता पंथियों का अभिवहन शब्द 'ब्रह्म सत्यम' उनका ब्रह्म पूर्ण परमेश्वर है। वह अखंड, अवगत, निश्बानी तत्व है, हव अजर–अमर, निरंकार, अजन्मा, अगोचर, ओंकार, मुरारी, प्रभु, परमात्मा, आनंद स्वरूप, विशम्भर, सरब अतीत, गोविंद, गुणातीत, सर्वव्यापक, अगम, अगाध, अध्यात्मक व सर्वेसर्वा सृष्टि का एक मात्र संचालनकर्ता है।
राधा स्वामी पंथ का आरंभ जनवरी सन् 1861 में बसंत पंचमी के दिन हुआ था। जिसकी स्थापना राय शामिग्राम जी द्वारा स्वामी जी महाराज श्री शिवदयाल सिंह जी की आज्ञा से आगरा में किया गया। पंथ को सुगठित तथा सुव्यवस्थित करने के लिए श्री ब्रह्मशंकर ने सन् 1902 में पंथ की एक केंद्रीय परिषद का गठन किया गया। इस परिषद् द्वारा तीन सदस्यों को 'नाम' देने का अधिकार दिया गया।[12] इस तीन सदस्यों में एक सदस्य बाबा जैमल सिंह थे। इन्होंने परिषद की स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश नीति के विरूद्ध विद्रोह स्वरूप 'राधा स्वामी शाखा' में विभक्त हो गया यथा परिषद संगठित शाखा, दयाल बाग शाखा, व्यास शाखा। [13] पंजाब में 'व्यास शाखा' का ही अधिक प्रचार और प्रसार है। इनकी शिष्य परंपरा में रामसिंह अरमान, संत ताराचंद प्रमुख हैं उन्होंने गुरू की महिमा का गुणगान कर सहजयोग, सूरत शब्द योग की बात कही है। आध्यात्मिक भाव निम्न वर्णित है।

गुरू महिमाः
दया करती गुरूदेव ने–खूब हुआ आनंद
अपने भीतर पा गया प्यारा परमानंद
सतगुरू चरण मैं रामसिंह अबर खरब प्रणाम
दया करी गुरूदेव ने बख्श दिया निज नाम।[14]

सतनाम महिमाः
सतनाम सत पुरूश का, सतलोक प्रवेश
चेतन ही चेतन वहां, चेतन रहे हमेश
सतनाम सत्पुरूष का, सतलोक में बास
शब्द योग से रामसिंह, होता है प्रकाश।[15]
सुरत शब्द योगः

सहजयोग' अथवा 'सहज साधना' अथवा सूरत शब्द की सहजाभिव्यक्ति नैसर्गिक बन पड़ी हैं। यथाः–

सहजे ही धुन होते हैं, सहजे ही आनंद
सहजे ही आनंद, सहज में योग कमावे
सहज अजपा जाप, सहज में सूरत चढावे
सहज निरखे रूप, सहज ही आनंद पावे
सहजे ही मन बस करै, सहज मुक्त हो जावे।[16]

संत चरण दास ने शब्द–धुन, अनहद, अनहद बाजे, अनहद की तान, शब्द की झांगड़ कहा है। उन्होंने शंख, मृदंग, बादल की गरज, घुंघरू, तुर, मुरली आदि दस धुनों का वर्णन किया है।[17] उन्होंने आचरण की शुद्धता, शरीर बारह मंजिलों का घर,[18] सचखंड शब्द की तरंग [19] व शब्द की एक तरंग से सृष्टि रचना माना है।[20] उन्होंने आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा/सम महि बरतै आपि निरारा[21] व गुरू की महिमा क वर्णन करते हुए लग शब्द अनाहद जाई[22] पर बल दिया है।

राधा स्वामी संप्रदाय में शब्द को जीवन का आधार[23] माना है। आगे उन्होंने इसके लिए कम्फरटर, पवित्र आत्मा माना है।[24] संतों और फकीरों ने चाहे वे किसी भी मत में आए हो आवागमन सिद्धांत को सभी ने माना है। मौलवी रूम साहिब फरमाते हैं कि– मैं बारंबार घास की तरह उगा हूं और मैंने चोरासी पहलू देखे हैं।[25] राधा स्वामी संप्रदाय में निरंजन नाम को अमृत रस माना है जो पार ब्रह्म से ऊपर है।[26] गुरूवाणी में निरंजन पद का सूक्ष्म देश के अधिष्ठाता पुरूष के लिए प्रयोग किया गया है। जिसके लिए कवलुं शब्द का प्रयोग किया है। संतों उसे सहस्र दल कमल कहा है, जो सूक्ष्म देश का अधिष्ठाता है।[27] राधा स्वामी संप्रदाय में सूफी साधना का प्रभाव मिलता उन्होंने प्रियतम पर प्रसन्नता[28] व सांसारिक वस्तुओं और संबंधों के संप्रेशण से परमात्मा प्राप्ति के साधन पर बल दिया है।[29] इस आंतरिक मानसरोवर में स्नान कर पवित्र हो जाने पर ही राम के प्रेम का पक्का रंग चढ़ता है वह अभ्यासी इस शांतिदायक और सुखद मानस को छोड़कर भी कभी विषयों की और नहीं दौड़ता है।[30]
इस प्रकार राधा स्वामी संप्रदाय ने पंजाब प्रदेश में जन साधारण अभियान चलाकर उस परमतत्व को प्राप्त करने के साधन को आम आदमी तक पहुंचाने का प्रयास किया है। उन्होंने मानव शरीर के अंदर ही चौरासी के सिद्धांत को विवेचित कर उससे मुक्ति प्राप्त करने के मार्ग को सुझाया है। अतः निरंजन पद का सूक्ष्म देश ही मनुष्य शरीर है जिसका प्रतिपादन राधा स्वामी संप्रदाय में दृष्टिगोचर होता है।

साध–संप्रदाय पंथ में आध्यात्मिक चिंतन

साध संप्रदाय का पंजाब संत साहित्य में विशिष्ट महत्व है। कई विद्वानों ने तो 'साध संप्रदाय' तथा 'सतनामी' संप्रदाय को सर्वशाः एक मानकर इनके इतिहासों को भांतिपूर्ण बना दिया गया है।[31] साध से तात्पर्य है कि जो सतनाम और सत शब्द का साधक होता है साध सतनामी कहलाता है।[32] इसे संप्रदाय के प्रवर्तक संत उदादास थे।
आचार्य परशुराम चतुर्वेदी जी का कहना है कि उपलब्ध सामग्री के आधार पर यदि कोई युक्ति संगत प्रमाण निकाला जा सके, तो यही हो सकता है कि वरीयान के साथ संप्रदाय को उदादास की प्रेरणा पाकर संवत 1600 के लगभग प्रवर्तित किया है। साध सप्रंदाय ने कबीर वाणी का अनुकरण कर उसे अनुभव गम्य बनाया है, उदादास को कबीर का अवतार माना जाता है। अतः कबीर पंथ का आचमन करना नैसर्गिक बन पड़ा है।
साध संप्रदाय में सूरत शब्द साधना ही स्वीकृत है। नाम सुमिरन का महत्व, निर्वान ज्ञान, अजपा जाप साधना के केंद्र बिंदु रहे हैं।
यथाः

उदा के दास खौसा सुमरन नाम मात्रा नित दायमी बताई।।
आद नाम जुगाद नाम, एक नाम सुमर सतनाम
सतसरूपी संत का ध्यान, सत अवगत तुम लीजो मान।[33]

अजपा जाप– सतगुरू दरसे वीरभान गावै म्हानै सवौसा सुमरन पाया[34]

दुय कर जोर साध कान्ह जी पठै अब मत भरमौ कोय।
सत का शब्द जो पाइयों भगत जुगों जुग होय।[35]

सूरत शब्द साधना–
पृथ्वी का कहीं न मानैं कोई, जिन बंदे सूरत से लाई

माफक भगत शब्द को परखैं, जिस की करनी आगे
दरसे..... ।
जिनके शब्द मिदा मन मांही यह नट और कला
साधना भाई..... ।[36]

'अगम पंथ है गत का गैला सतगुरू की मेहर सै साध चठैला' प्रायः हर साध अजपा पद्धति से प्रभावित रहा है। इस पंथ में भी सतगुरू का महत्व अति विशिष्ट है।

सिक्ख धर्म संप्रदाय में आध्यात्मिक चिंतन

नानक देव जी के समय से सिक्ख धर्म में अलगाव प्रारंभ हो गया था। जब उनके पुत्र श्री चंद ने अपना पृथक 'उदासी संप्रदाय' बना लिया था। इसी प्रकार अपने पिता चौथे गुरू रामदास की गद्दी प्राप्त न कर सकने पर प्रिथीचंद्र ने भी अपना एक 'मीना पंथ' बना लिया था। गुरू अमरनाथ के शिष्य किसी 'हंदल' नामक जाट ने 'हंदली मत' पृथक बना लिया। गुरू हरराय के पुत्र रामराय ने 'रामैटया पंथ' का प्रवर्तन किया था। अब तक का अलगाव अथवा पंथ निर्माण इतना उग्र नहीं था जितना की गुरू गोविंद सिंह जी की मृत्योपरांत वीर बंदा बहादुर के समय 'खलखासा' तथा 'बंदई खालसा' इत्यादि पंथों में देखा जाता है।[37] अतः सिक्ख धर्म विभिन्न पंथों में बंटकर छिन्न–भिन्न हो गया। सम्वत 1947 वि. के लगभग उसके कुछ अनुयायियों के ह्रदय में सुधार की भावना जागृत हुई। इस प्रकार नवीन संस्थाएं स्थापित की गई जिसमें कुछ सुधारक तत्वों की सृष्टि आरंभ हो गई।[38] सिक्ख धर्म के संप्रदाय– उदासी संप्रदाय, निर्मल संप्रदाय, नामधारी अथवा कूका संप्रदाय, सहजधारी तथा केराधारी, सुथराशाही संप्रदाय, सेवापंथी संप्रदाय, अकाली संप्रदाय, भगतपंथी संप्रदाय, गुलाब पंथी संप्रदाय, निरांकरी संप्रदाय, नांगी संप्रदाय, शिव नारायणी सप्रदाय, निरंजनी संप्रदाय, सच्चा सौदा। [39]

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि सुमिरन, सत्संग, इत्यादि को भी सभी पंथों में साधना का सहायक तत्व मानते हैं। साध संप्रदाय में सूरत शब्द–पद्धति ही स्वीकृत है। इसमें नाम सुमिरन कृपा तथा सत्संग आदि तत्वों का विशेष महत्व है।

संदर्भ

1. संत हरिदास की वााणी, पद 240, पृ. 22
2. निश्चल दास, विचार सागर, पृ. 327–328
3. हरदास की वाणी, राग धनाश्री के उदधृत पृ0 156
4. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य– पृ. 174
5. सूरजभान, हरियाणा का संत–साहित्य, पृ. 255
6. परमानंद, हसं चेतावनी, पृ. 59
7. वही, पृ. 10
8. परमानंद, हंस चेतावनी, पृ. 108
9. वही, पृ. 109
10. सूरजभान, हरियाणा का संत–साहित्य, पृ. 253
11. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य, पृ. 254
12. वही
13. परमानंद हंस चेतावनी, पृ. 59
14. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य, पृ. 262
15. चतुर्वेदी, आचार्य परशुराम, उत्तरी भारत की संत परंपरा, पृ. 423–428
16. वही, पृ. 424
17. शंगारी, टी आर, संत चरणदास जीवन और उपदेश, पृ. 169
18. सहगल, शंगारी, भंडारी लेखक द्वय, उपदेश राधा स्वामी, पृ. 97
19. महाराज जगत सिंह जी, आत्मज्ञान,इसु गुफा महि अखुट भंडारा, तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा अपि गुपतु परगटु हे आपे गुरू सबदी आपु वंणावणिआ, पृ. 32
20. सहगल, मनमोहन, परम संत महाराज सावन सिंह जीवन और उपदेश, पृ. 198
21. महाराज चरण सिंह जी, सत्संग आदि निरंजनों प्रभु निरंकारा, पृ. 5
22. महाराज चरण सिंह जी, गुरू कहे खोलकर भाई, पृ. 2
23. सेवा सिंह, जिज्ञासुओं के लिए, पृ. 30
24. महाराज चरण सिंह जी, संतों का उपदेश,पृ. 9
25. सावन सिंह जी, गुरूमत सिद्धांत (दूसरा भाग),बारहा मिसले गय रोइंदा अम, हफ्तों दो हफ्ताद कालब दीदा अम, पृ. 121
26. सावन सिंह जी, गुरूमत सिद्धांत (पहला भाग) कालै कवलुं निरंजनु जाणै बूझै करमु सु सबदु पछाणै, पृ. 159
27. सावन सिंह जी, शब्द की महिमा के शब्द, लख चउरासीह भ्रमते भ्रमते दुलभ जनमु अब पाइयो, पृ. 577
28. शंगारी तिलक राज, खाक, हजार साल इबादत कुनद नमाजी नेस्त आं कस कि इश्क न दारद खुदा राजी नेस्त, पृ. 71
29. शांति, सेठी, (सं.) संत कबीर, पृ. 113
30. उपाध्याय, काशीनाथ पंचानन, नाम भक्तिः गोस्वामी तुलसीदास, पृ. 47
31. श्री चेतनदास, चेतनप्रकाश, सागर (अमुद्रित) सुमिरन का अंग
32. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य, प. 213
33. वही पृ. 216
34. वही, पृ. 217
35. वही, पृ. 218
36. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य, पृ. 219–220
37. वही, पृ. 262
38. वही, पृ. 263
39. वही, पृ. 263–275